MASA-05

# वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

## अनुक्रमणिका


| इकाई सं. | इकाई का नाम |
|---|---|
| इकाई–1 | संस्कृत गद्य का उद्भव एवं विकास |
| इकाई–2 | महाकवि बाणभट्ट कृत कादम्बरी की गद्य शैली का सामान्य परिचय |
| इकाई–3 | महाराज शूद्रक का वैशिष्ट्य वर्णन (आसीदशेष..... कौतुकमाकर्ण्यताम्) |
| इकाई–4 | विन्ध्याटवी वर्णन (अस्ति पूर्वापर.....अकरोदशनम्) |
| इकाई–5 | प्रभात वर्णन एव शबरसैन्य द्वारा विन्ध्याटवी के भयंकर विध्वंस का वर्णन (एकदा तु..... गरणमद्यैव उपपादयेत् अंश की सप्रसंग व्याख्या) |
| इकाई–6 | जाबालि आश्रम वर्णन (इत्येवं चिन्तयत्येव..... यदि कुतूहलम् अंश की सप्रसंग व्याख्या) |
| इकाई–7 | महाकवि माघ कृत 'शिशुपालवधम् महाकाव्य की विशेषताओं का मूल्यांकन |
| इकाई–8 | सभाभवन में श्रीकृष्ण, बलराम एवम् उद्धव की मन्त्रणा से सम्बन्धित वर्णन (शिशुपालवधम् द्वितीय सर्ग, श्लोक 1 से 40) |
| इकाई–9 | सभाभवन में श्रीकृष्ण, बलराम एवम् उद्धव की मन्त्रणा से सम्बन्धित वर्णन (शिशुपालवधम् द्वितीय सर्ग, श्लोक 41 से 80) |
| इकाई–10 | सभाभवन में श्रीकृष्ण, बलराम एवम् उद्धव की मन्त्रणा से सम्बन्धित वर्णन (शिशुपालवधम् द्वितीय सर्ग, श्लोक 81 से 118) |
| इकाई–11 | महाकवि बिल्हण विरचित विक्रमाङ्कदेवचरितम् ऐतिहासिक महाकाव्य की विशेषताओं का मूल्याङ्कन |
| इकाई–12 | देवस्तुति एवं प्रभातवर्णन (विक्रमांकदेवचरितम, प्रथम सर्ग, श्लोक 1 से 35) |
| इकाई–13 | चालुक्यवंशीय राजाओं का प्रताप वर्णन (विक्रमांकदेवचरितम, प्रथम सर्ग, श्लोक 36 से 70) |
| इकाई–14 | चालुक्यवंशीय राजाओं का प्रताप वर्णन (विक्रमांकदेवचरितम, प्रथम सर्ग, श्लोक 71 से 106) |
| इकाई–15 | आचार्य पुष्पदत्त प्रणीत शिवमहिम्नः स्तोत्र में शिव का महिमामय वर्णन (श्लोक 1 से 20) संस्कृत–व्याख्या |
| इकाई–16 | स्तोत्र पाठ का महत्त्व (श्लोक 21 से 43) संस्कृत–व्याख्या |
| इकाई–17 | कुगारसम्भव (पञ्चम सर्ग)<br>(श्लोक संख्या 1 से 60 की व्याख्या ) |
| इकाई–18 | कुमारसम्भव (पञ्चम सर्ग)<br>(श्लोक संख्या 61 से 86 की व्याख्या ) |